International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

हरियाणा में परंपरा और आधुनिकता का संगम : एक सामाजिक–सांस्कृतिक भौगोलिक अध्ययन

रेणु कुमारी
शोधार्थी, सामाजिक विज्ञान विभाग (भूगोल), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा
renudahiya383@gmail.com

डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा
शोध निर्देशक, सामाजिक विज्ञान विभाग (भूगोल), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा

सारांश

हरियाणा भारत के उत्तर–पश्चिम में स्थित वह राज्य है जहाँ भूगोल और संस्कृति का गहरा संबंध देखने को मिलता है। यहाँ की मिट्टी, कृषि–आधारित अर्थव्यवस्था, जलवायु, एवं लोकजीवन ने सामाजिक व्यवहार और सांस्कृतिक रूपों को आकार दिया है। राज्य के अलग–अलग भौगोलिक क्षेत्रों पूर्वी मैदान, मध्य समतल क्षेत्र और दक्षिण–पश्चिमी शुष्क पट्टी में लोकपरंपराओं, जीवनशैली और मूल्य–प्रणालियों में स्पष्ट विविधता दिखाई देती है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, शिक्षा और संचार–सुविधाओं के प्रसार ने इन पारंपरिक ढाँचों को नया रूप दिया है। गाँवों की सीमाओं से बाहर निकलती हुई जनसंख्या, शिक्षा और मीडिया–संपर्क के कारण अब हरियाणा का समाज आधुनिकता की दिशा में अग्रसर है। यह संक्रमण न केवल आर्थिक या तकनीकी है, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक रूपांतरण का भी प्रतीक है। हरियाणा में परंपरा और आधुनिकता का यह संगम राज्य के भौगोलिक स्वरूप के साथ–साथ उसकी सांस्कृतिक चेतना का भी प्रतिफल है। लोककला, लोकनृत्य, उत्सव, पोशाक, भोजन–संस्कृति और सामाजिक मानदंड आज परंपरा की जड़ों में टिके रहते हुए आधुनिकता से संवाद कर रहे हैं। इस प्रकार, हरियाणा का सांस्कृतिक भूगोल एक जीवंत उदाहरण है कि कैसे स्थानिक विविधता, आर्थिक परिवर्तन और सामाजिक चेतना मिलकर नए सांस्कृतिक यथार्थ का निर्माण करती है।

मुख्य शब्द : हरियाणा, सामाजिक–सांस्कृतिक भूगोल, परंपरा, आधुनिकता, क्षेत्रीय विविधता, लोकसंस्कृति, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, सांस्कृतिक परिवर्तन, समाज

1. परिचय

हरियाणा का भौगोलिक और सांस्कृतिक परिदृश्य

हरियाणा भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिमी हिस्से में स्थित है, जिसका क्षेत्रफल 44,212 वर्ग–किमी है तथा इसमे 22 जिले सम्मिलित हैं। यह राज्य उस सामाजिक–भूगोलिक परिवर्तन का उदाहरण प्रस्तुत करता है जिसमें पहले ग्रामीण–कृषि–आधारित आर्थिक व्यवस्था थी और आज वह औद्योगिक–शहरी अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित हो रही है, जबकि अपनी जीवंत

लोक–परंपराओं को भी बनाए रखे हुए है।[i] जनसंख्या के संदर्भ में, 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 65 प्रतिशत की आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती थी, जो कि राज्य के सामाजिक–विकास एवं स्थानिक विभाजन को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। साक्षरता दर 75.6 प्रतिशत थी, जो राष्ट्रीय औसत के आसपास थी। भौगोलिक दृष्टि से हरियाणा को तीन प्रमुख सांस्कृतिक–भौगोलिक पट्टियों में विभाजित किया जा सकता है– उत्तर–पूर्व में शिवालिक की तलहटी, मध्य में उपजाऊ मैदान तथा दक्षिण–पश्चिम में अरावली–क्षेत्र।

ये विभिन्न क्षेत्र न सिर्फ प्राकृतिक विविधता प्रस्तुत करते हैं बल्कि सामाजिक–संस्कृतिक विविधताओं को भी प्रभावित करते हैं– कृषि–प्रमुख क्षेत्रों में पारंपरिक जीवनशैली अधिक स्पष्ट थी, वहीं उद्योग–उन्मुख एवं शहरी पट्टियों में आधुनिकता का प्रभाव तीव्र रहा। सांस्कृतिक दृष्टि से, हरियाणा की लोक–परंपराएँ, लोकगीत–रागिनी, त्योहार–समारोह तथा हस्तशिल्प इसकी सांस्कृतिक जड़ों को दर्शाते हैं। हरियाणा का सामाजिक–सांस्कृतिक भूगोल वह क्षेत्र है जहाँ परंपरा और आधुनिकता का संगम स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। संसाधन–पहुंच, शहरीकरण, शिक्षा और संचार–सुविधाओं के प्रसार ने यहाँ की पारंपरिक संरचनाओं को चुनौती दी है, लेकिन पूरी तरह नहीं निष्कासित किया।[ii]

तालिका 1 : समग्र सामाजिक सेवाएँ

वर्ष	शिक्षा :	सामाजिक कल्याण :	स्वास्थ्य :	अन्य :	कुल सामाजिक सेवाएँ :
2016–17	13.4	6.1	4.0	6.9	30.4
2019–20	11.6	7.0	3.8	5.5	36.1
2023–24	11.0	6.8	4.7	5.3	30.5
2024–25 (अनुमान)	10.9	7.6	5.0	5.0	31.1
2025–26 (अनुमान)	10.4	9.7	4.7	5.7	32.8

स्रोत : आँकड़ें हरियाणा सरकार के बजट प्रकरण एवं अनेक आर्थिक रिपोर्टों से संकलित हैं।

2016–17 से 2025–26 तक हरियाणा के बजट में सामाजिक सेवाओं का कुल हिस्सा लगभग 30 से 33 प्रतिशत के बीच स्थिर रहा है, जो यह दर्शाता है कि राज्य ने विकास के साथ–साथ मानवीय और सांस्कृतिक मूल्यों को भी समान प्राथमिकता दी है।

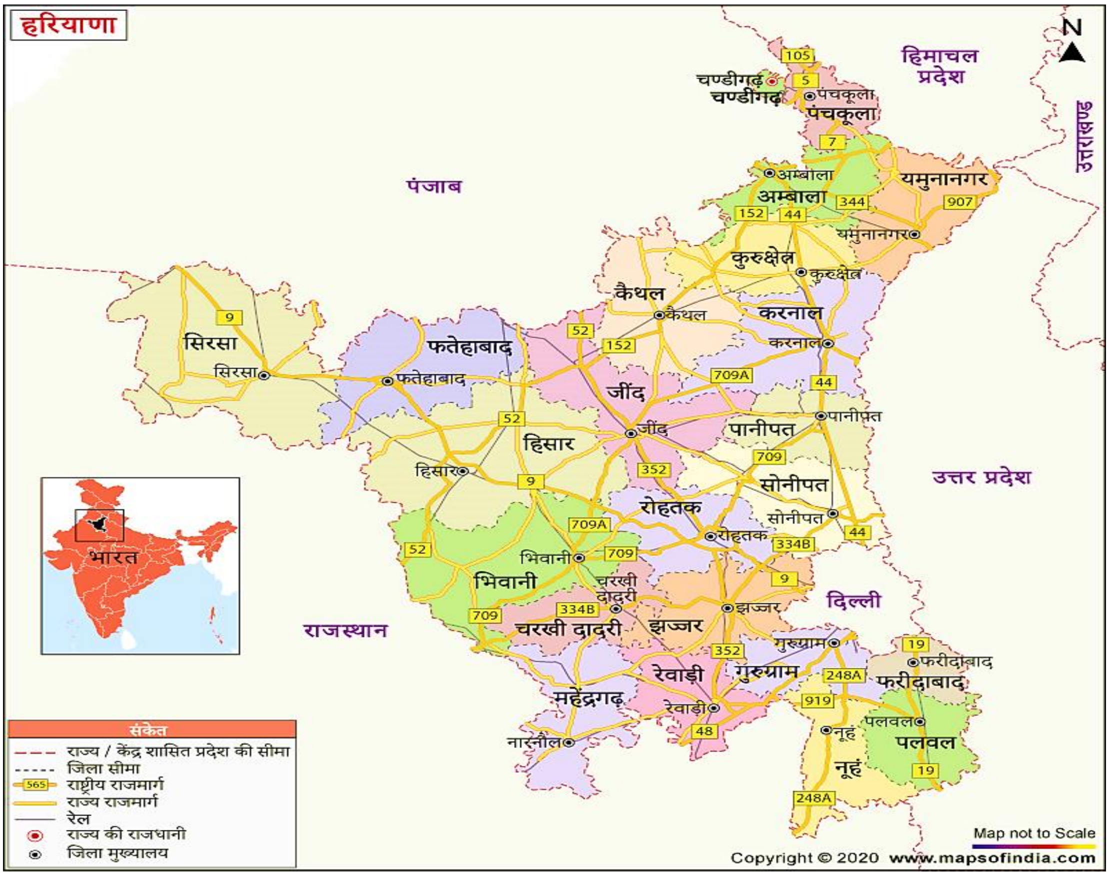

हरियाणा का भौगोलिक वितरण

तालिका 2 : हरियाणा का मूलभूत भौगोलिक–ओर जनसांख्यिकी

सूचकांक	इकाई	हरियाणा	भारत	वर्ष
भौगोलिक क्षेत्रफल	वर्ग–किमी	44,212	–	2023
ग्रामीण जनसंख्या	प्रतिशत	65.0 प्रतिशत	68.8 प्रतिशत	2011
साक्षरता दर	प्रतिशत	75.6 प्रतिशत	74.0 प्रतिशत	2011

स्रोत : हरियाणा आर्थिक सर्वेक्षण (2014–15 से 2023–24) से संकलित

विषय की प्रासंगिकता

आज के समय में परंपरा और आधुनिकता का संगम विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि हरियाणा में शिक्षा, शहरीकरण, संचार–माध्यमों और औद्योगिकीकरण ने पारंपरिक सामाजिक–संस्कृति में नवीन परिवर्तन लाये हैं। उदाहरणस्वरूप, प्रदेश की भोजन–संस्कृति में बदलाव, कृषि–आधारित उपजी की जगह अन्य विकल्पों का प्रसार देखने को मिला है।

अध्ययन का दायरा एवं कार्यविधि

यह शोध पूरे राज्य को नहीं बल्कि उसके प्रमुख भूगोल–क्षेत्रों (उत्तरी–पर्वतीय, मध्य–मैदान, दक्षिण–पश्चिमी शुष्क पट्टी) तक सीमित है, तथा मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोत–साहित्य

(सरकारी सर्वेक्षण, सांख्यिकीय रिपोर्ट, शोध–पत्र) पर आधारित है।

2. हरियाणा के सामाजिक–सांस्कृतिक भूगोल का विकास : पारंपरिक सामाजिक–सांस्कृतिक आधार

हरियाणा का सामाजिक–संस्कृतिक भूगोल गहरी कृषि–परंपराओं, ग्राम–संचार प्रणालियों तथा लोक–जीवन के निर्वहन से गठित हुआ है। कृषि–प्रधान जीवनशैली ने यहाँ की सामाजिक व्यवस्था, ग्राम–ढाँचे, संसाधन–प्रवृत्तियों और लोक–प्रथाओं को वर्षों तक प्रभावित किया है। उदाहरणस्वरूप, राज्य में कृषि–विभाजन, गोधन–स्वावलंबन एवं खेत–घर संस्कृति लंबे समय तक सक्रिय रही है।[iii] गाँव–संरचनाएँ, पंचायत व्यवस्था, जातिगत बंधन एवं सामाजिक अनुष्ठान–परंपराएँ इस भूगोल में आज भी जीवित हैं। इस प्रकार, हरियाणा में पारंपरिक सामाजिक–सांस्कृतिक आनुवंशिक संरचनाएँ और सामाजिक–स्थिति का आधार रही हैं। भौगोलिक रूप से राज्य को तीन प्रमुख पट्टियों में विभाजित किया जा सकता है– उत्तर–पूर्व में शिवालिक की तलहटी, मध्य में उपजाऊ समतल मैदान तथा दक्षिण–पश्चिमी अरावली–क्षेत्र। प्रत्येक क्षेत्र ने सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन को विशिष्ट रूप प्रदान किया है। उदाहरण के लिए, शुष्क और सीमांत–भागों में संसाधन–पहुंच एवं परिवहन–संपर्क की अनुपस्थिति ने सामाजिक–परिवर्तन की गति को धीमा रखा।[iv]

लोक–कला, तीज–त्योहार, हस्त–शिल्प–परंपराएँ तथा संगीत–रागिनी–प्रथाएँ यहाँ के सामाजिक–भूगोल का अभिन्न अंग रही हैं। ग्रामीण जीवन की सांस्कृतिक समरसता ने सामाजिक–स्थानिक समरसता को सम्भव किया।[अ] ग्राम–जीवन की सांस्कृतिक समरसता में बदलाव तब शुरू हुआ जब सिंचाई, शिक्षा–संस्थान और शहरी–विस्तार जैसे आधुनिक तत्व–पूँजी गाँवों तक पहुँचे। परंतु यह परिवर्तन परंपराओं को समाप्त नहीं करता, बल्कि उन्हें नए रूप में समायोजित करता है– उदाहरणस्वरूप, परंपरागत त्यौहार अब शहरी–आधारित कार्यक्रमों, लाइट–एंड–साउंड प्रस्तुतियों और पर्यटन–उत्सवों के माध्यम से मनाए जाने लगे। पारंपरिक सामाजिक–सांस्कृतिक आधार का विश्लेषण हमें यह समझने में सहायता करता है कि हरियाणा में परंपरा और आधुनिकता किस प्रकार भू–स्थानिक एवं सांस्कृतिक रूप से एक दूसरे के साथ समायोजित हो रही है।

तालिका 3 : हरियाणा में लोक–उत्सव व परंपरागत कार्यक्रम

वर्ष	कार्यक्रम	परंपरागत विषय	आधुनिक रूप
2015	सूरजकुंड हस्तशिल्प मेला	हस्तशिल्प, लोक–कला	30 देशों सहित ग्लोबल मंच
2018	पिंजौड़ा हेरिटेज फेस्टिवल	मोगल–बाग, लोकनृत्य	लाइट–एंड–साउंड श्रृंखला
2019	अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव	आध्यात्मिक दर्शन	3–व डिजिटल प्रस्तुति

स्रोत : हरियाणा आर्थिक सर्वेक्षण (2016–17 से 2023–24), पर्यटन प्रकरण, से संकलित

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

3. आर्थिक संरचना में परिवर्तन

हरियाणा की अर्थव्यवस्था ने पिछले चार–पाँच दशकों में एक महत्वपूर्ण रूपांतरण देखा है। यह रूपांतरण केवल उत्पादन संरचना में नहीं बल्कि सामाजिक–स्थानिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में भी जुड़ा हुआ है। प्रारंभ में इस राज्य का अर्थ–आधार कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों (जैसे पशुपालन, मछलीपालन) पर आधारित था, किन्तु अब यह उद्योग और सेवाक्षेत्रों की ओर तेजी से अग्रसर है।

प्रारंभिक दशकों में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों का राज्य की अर्थव्यवस्था में भाग–राशि काफी अधिक थी। उदाहरणस्वरूप, 1969–70 में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र ने लगभग 60.7 प्रतिशत की हिस्सेदारी रखी थी, जबकि उद्योग एवं सेवा–क्षेत्र बहुत कम थे। आगे, 2006–07 में उद्योग–सेवाओं की साझेदारी बढ़कर क्रमशः 32.1 प्रतिशत (उद्योग) और 46.6 प्रतिशत (सेवा) हो गई थी, जबकि कृषि का हिस्सा घटकर लगभग 21.3 प्रतिशत रह गया था। आज की स्थितियों को देखें तो, 2023–24 में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों की हिस्सेदारी लगभग 16.9 प्रतिशत, उद्योग की 35.4 प्रतिशत और सेवा–क्षेत्र की 47.7 प्रतिशत रही है।

तालिका 4 : क्षेत्रीय संरचना का वर्षवार प्रतिशत

वर्ष	कृषि एवं संबद्ध (:)	उद्योग (:)	सेवा–क्षेत्र (:)
1969–70	60.7	17.6	21.7
2006–07	21.3	32.1	46.6
2016–17	17.8	30.5	51.7
2019–20	16.6	32.8	50.6
2023–24	16.9	35.4	47.7

स्रोत : हरियाणा आर्थिक सर्वेक्षण (2014–15 से 2023–24) से संकलित

तालिका 5 : प्रति व्यक्ति आय वृद्धि (हरियाणा)

वर्ष	प्रति व्यक्ति आय (₹ चालू मूल्य)	वृद्धि (:)
2011–12	1,06,085	–
2016–17	1,78,890	10.5
2019–20	2,64,207	11.9
2023–24	3,02,104	11.5

स्रोत : हरियाणा आर्थिक सर्वेक्षण (2016–17; 2017–18; 2019–20; 2023–24) से संकलित

इन दोनों तालिकाओं से स्पष्ट होता है कि हरियाणा ने कृषि–प्रधान अर्थव्यवस्था से निकलकर आधुनिक औद्योगिक–सेवा आधारित अर्थव्यवस्था में संक्रमण किया है। यह रूपांतरण परंपरागत सामाजिक–संस्कृतियों के साथ–साथ क्षेत्रीय भूगोल के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। उद्योग–शहरी केंद्रों के विकास, सेवा–क्षेत्र के विस्तार, परिवहन–संपर्क व शिक्षा–विस्तार ने

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

राज्य के ग्रामीण और शहरी भूगोल को नया आयाम दिया है। परंतु इस बदलाव ने परंपराओं को नष्ट नहीं किया वे अब आधुनिक रूपों में जीवित हैं, जैसे लोक–कार्य, कृषि–त्योहार, सामुदायिक उपक्रम।

4. सांस्कृतिक पर्यटन एवं लोक–धरोहर : आधुनिक अर्थव्यवस्था में सांस्कृतिक पुनर्निर्माण

हरियाणा में लोक–परंपराएँ और सांस्कृतिक धरोहर आधुनिक पर्यटन एवं सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था के माध्यम से पुनर्जीवित हो रही हैं। राज्य द्वारा प्रायोजित मेलों–उत्सवों, पर्यटन–स्थलों और हस्तशिल्प–उद्योगों ने सांस्कृतिक स्वरूपों को नए अर्थ और अवसर दिए हैं।[vi]

तालिका 6 : सांस्कृतिक पर्यटन के प्रमुख संकेतक

वर्ष	पर्यटक कॉम्प्लेक्स की संख्या	प्रमुख मेले–उत्सवों की संख्या	विदेशी पर्यटक आगमन (लाख)	पर्यटन राजस्व (₹ करोड़)
2015–16	43	5	1.6	87
2018–19	44	7	1.9	110
2020–21	47	8	–	60
2023–24	48	10	2.1	145

स्रोत : हरियाणा आर्थिक सर्वेक्षण 2023–24 (पर्यटन प्रकरण), से संकलित

5. सांस्कृतिक और भौतिक संकेतक : परिवर्तन के मात्रात्मक सूचक

हरियाणा का सामाजिक–सांस्कृतिक भूगोल केवल परंपरागत लोकजीवन और आधुनिक शहरीता का मिश्रण नहीं है, बल्कि यह आर्थिक, भौतिक और मानव–विकास संकेतकों में भी परिलक्षित होता है।[vii] राज्य के विकास–सूचकांक (साक्षरता, आय, ऊर्जा उपभोग) यह दर्शाते हैं कि किस प्रकार परंपरा और आधुनिकता का समन्वय भौतिक परिवर्तन के साथ आगे बढ़ा है।

तालिका 7 : सांस्कृतिक–आर्थिक एवं भौतिक सूचक

वर्ष	शहरीकरण दर (:)	साक्षरता (:)	प्रति व्यक्ति बिजली खपत (ॉ)
2014–15	34.9	75.6	1502
2018–19	36.0	76.5	1875
2020–21	37.1	77.3	2115
2023–24	39.0	78.0	2360

स्रोतः हरियाणा आर्थिक सर्वेक्षण 2014–15 से 2023–24 (सामाजिक व आर्थिक प्रकरण), से संकलित

तालिका 8 : प्रमुख सांस्कृतिक–भौगोलिक क्षेत्रों में सामाजिक–परिवर्तन के सूचक

सांस्कृतिक क्षेत्र	प्रमुख व्यवसाय	आधुनिक विकास तत्व

शिवालिक पट्टी (उत्तर–पूर्व)	वन उत्पाद, लकड़ी कला	पर्यावरण–पर्यटन, हिल–इकोनॉमी
मध्य मैदान	कृषि, दुग्ध–उद्योग	औद्योगिक क्लस्टर, सड़क नेटवर्क
अरावली क्षेत्र (दक्षिण–पश्चिम)	पशुपालन, हस्तशिल्प	सौर–ऊर्जा परियोजनाएँ, ईको–पर्यटन

स्रोतः हरियाणा आर्थिक सर्वेक्षण 2023–24 (भूगोल प्रकरण) तथा हरियाणा पर्यटन विभाग 2023 (सांस्कृतिक रिपोर्ट) से संकलित

6. हरियाणा की लोकसंस्कृति और परंपरागत अभिव्यक्तियाँ

हरियाणा की लोकसंस्कृति उसकी भूमि, जलवायु और कृषि जीवन से गहराई से जुड़ी हुई है। यहाँ की संस्कृति का निर्माण खेतों, पशुपालन, ग्रामीण श्रम और सामूहिक जीवन की परंपराओं से हुआ है। राज्य के मध्य और दक्षिण–पश्चिमी भाग जैसे रोहतक, भिवानी, रेवाड़ी, झज्जर और जींद लोककला और संगीत के प्रमुख केंद्र रहे हैं, जबकि उत्तर–पूर्वी क्षेत्र पंचकूला और यमुनानगर पर्व–उत्सवों और धार्मिक लोककथाओं के लिए प्रसिद्ध हैं।

हरियाणवी लोकगीत लोकजीवन का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करते हैं। रागिनी, सावन गीत, फाग, तथा होली गीतों में किसान जीवन, श्रम, प्रेम और समाज की भावनाएँ झलकती हैं। ग्राम्य जीवन में महिलाएँ समूह में गीत गाती हैं जो सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करते हैं। हरियाणा के प्रसिद्ध लोकगायक लखमीचंद (1903–1945) और दयाचंद मयना (1915–1972) ने इन गीतों को सामाजिक चेतना और नैतिक संदेश के माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया।[viii]

राज्य के लोकनृत्य जैसे घूमर, खोरिया, फाग और धमाल विशेष अवसरों पर किए जाते हैं। घूमर प्रायः विवाह और तीज पर्व पर महिलाओं द्वारा किया जाता है, जबकि फाग नृत्य वसंत के आगमन का प्रतीक माना जाता है। इन नृत्यों के साथ गाए जाने वाले गीत सामूहिकता और आनंद के प्रतीक हैं। लोककथाएँ भी हरियाणा की सांस्कृतिक चेतना का हिस्सा हैं, जिनमें मोहन–भट्टी, सुल्तान–रजिया और तेजन जैसी कथाएँ साहस, निष्ठा और प्रेम का संदेश देती हैं।

हरियाणा की हस्तकला और लोकशिल्प भी उसकी संस्कृति की पहचान हैं। सोनीपत और झज्जर में मिट्टी के बर्तन बनाना, हिसार और रोहतक में लकड़ी की नक्काशी, तथा करनाल में बुनाई की परंपरा आज भी जीवित है। सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय हस्तशिल्प मेला, जो 1987 से आयोजित होता आ रहा है, हरियाणा की कला और शिल्पकला को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा प्रदान करता है।

7. शिक्षा, शहरीकरण और संचार–सुविधाओं की भूमिका

हरियाणा में बीते तीन दशकों के दौरान शिक्षा, शहरीकरण और संचार–सुविधाओं ने समाज की संरचना, जीवनशैली और सांस्कृतिक व्यवहारों को मूल रूप से बदल दिया है। 1991 की

जनगणना के अनुसार राज्य की साक्षरता दर 67.9 प्रतिशत थी, जो 2011 में बढ़कर 75.6 प्रतिशत हो गई। इसमें पुरुष साक्षरता 84 प्रतिशत और महिला साक्षरता 65 प्रतिशत दर्ज की गई। ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षा का प्रसार तेज हुआ है। 2000 के बाद राज्य सरकार ने "हरियाणा साक्षरता मिशन" और "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" जैसे कार्यक्रम शुरू किए जिनका प्रभाव महिला–शिक्षा पर विशेष रूप से पड़ा। 2021–22 के शैक्षिक वर्ष में राज्य का उच्च शिक्षा नामांकन अनुपात 28.4 प्रतिशत दर्ज किया गया जो राष्ट्रीय औसत 27.3 प्रतिशत से अधिक था।

राज्य के प्रमुख शैक्षणिक केंद्र जैसे कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय (1956), महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक (1976), चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय हिसार (1970) और आईआईएम रोहतक (2010) ने प्रदेश की शैक्षिक पहचान को नया स्वरूप दिया है। गुरुग्राम और फरीदाबाद में निजी विश्वविद्यालयों एवं तकनीकी संस्थानों के विकास ने युवा–वर्ग में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ाई है। इससे ग्रामीण–शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा–अंतर घटा है और आधुनिक सोच तथा प्रतिस्पर्धा–संस्कृति का प्रसार हुआ है।

शहरीकरण ने राज्य के सामाजिक भूगोल को और अधिक गतिशील बनाया है। 1991 में जहाँ केवल 24.6 प्रतिशत जनसंख्या शहरी थी, वहीं 2011 में यह बढ़कर 34.9 प्रतिशत हो गई और 2023 के अनुमान के अनुसार यह आँकड़ा 39 प्रतिशत के करीब पहुँच चुका है। गुरुग्राम, फरीदाबाद, रोहतक, पानीपत, हिसार और यमुनानगर राज्य के प्रमुख शहरी केंद्र हैं। गुरुग्राम में 1980 के दशक में स्थापित उद्यम ''उद्योग विहार'' और 2003 में विकसित ''डीएलएफ साइबर सिटी'' ने इसे राष्ट्रीय और वैश्विक कॉर्पोरेट केंद्र के रूप में स्थापित किया। इन शहरों में आधुनिक आवासीय ढाँचे, मॉल, शिक्षा–संस्थान और स्वास्थ्य–सुविधाओं का विकास हुआ जिससे ग्रामीण–जनसंख्या का प्रवास इन नगरों की ओर बढ़ा। इसका सीधा असर सामाजिक संबंधों, परिवार–संरचना और परंपरागत जीवनशैली पर पड़ा। संयुक्त परिवारों की जगह नाभिकीय परिवारों का चलन बढ़ा और महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार–भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

संचार–सुविधाओं के विस्तार ने इस परिवर्तन को और तीव्र बनाया है। 2001 में जहाँ हरियाणा में मोबाइल फोन ग्राहकों की संख्या मात्र 5 लाख थी, वहीं 2023 में यह संख्या बढ़कर 3.6 करोड़ से अधिक हो चुकी है। इंटरनेट कनेक्टिविटी के मामले में भी राज्य ने उल्लेखनीय प्रगति की है– 2022 तक राज्य की 81 प्रतिशत आबादी इंटरनेट का उपयोग कर रही थी, जो राष्ट्रीय औसत से लगभग 10 प्रतिशत अधिक है। दूरसंचार विभाग के अनुसार, हरियाणा के प्रत्येक गाँव में 4जी नेटवर्क उपलब्ध है और 2024 में 5जी सेवा भी लगभग सभी जिलों में चालू हो चुकी है। मीडिया, टेलीविजन और सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म ने ग्रामीण समाज में आधुनिक सोच, लैंगिक समानता और शिक्षा–जागरूकता को बढ़ाया है। अब गाँवों में रहने वाले युवा वैश्विक प्रवृत्तियों से परिचित हैं और सांस्कृतिक रूप से अधिक खुले दृष्टिकोण के साथ जीवन–शैली अपनाने लगे हैं।

इन तीनों घटकों शिक्षा, शहरीकरण और संचार–सुविधाओं ने मिलकर हरियाणा के सामाजिक–सांस्कृतिक भूगोल में एक ऐसा संतुलन बनाया है जहाँ परंपरा मिट नहीं रही

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

बल्कि आधुनिकता के साथ एकीकृत हो रही है। विद्यालयों में पारंपरिक लोककला और खेल–संस्कृति को बनाए रखते हुए तकनीकी शिक्षा को जोड़ा गया है। ग्रामीण समाज में इंटरनेट–साक्षरता और डिजिटल भुगतान ने नई आर्थिक चेतना उत्पन्न की है। शहरों में औद्योगिक और सेवाक्षेत्र आधारित रोजगार ने जीवन–स्तर सुधारा है, जबकि गाँवों में सामाजिक जागरूकता और शिक्षा ने समानता की भावना को प्रबल किया है। इस प्रकार, शिक्षा और संचार–आधारित आधुनिकता हरियाणा में सामाजिक परिवर्तन का वास्तविक इंजन बन चुकी है जो राज्य की सांस्कृतिक आत्मा को मिटाए बिना उसे विकसित कर रही है।

8. महिलाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति में परिवर्तन

हरियाणा के सामाजिक ढाँचे में महिलाओं की भूमिका पारंपरिक रूप से परिवार, कृषि और घरेलू कार्यों तक सीमित रही है। परंतु बीते तीन दशकों में शिक्षा, शहरीकरण, औद्योगीकरण और सरकारी नीतियों ने महिलाओं की स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन लाया है। 1991 की जनगणना के अनुसार राज्य में महिला साक्षरता दर मात्र 55 प्रतिशत थी, जो 2011 में बढ़कर 65.9 प्रतिशत और 2023 में लगभग 72 प्रतिशत के आसपास पहुँच गई है। इस वृद्धि ने न केवल शिक्षित महिला जनसंख्या को बढ़ाया बल्कि उनके सामाजिक व्यवहार और निर्णय–प्रक्रिया में भागीदारी को भी सशक्त किया।

गुरुग्राम, रोहतक, फरीदाबाद और पंचकूला जैसे शहरी जिलों में महिलाएँ अब निजी कंपनियों, शिक्षण संस्थानों और सेवा–क्षेत्रों में सक्रिय हैं। हरियाणा सरकार की ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' योजना (2015) और ''महिला सशक्तिकरण नीति'' (2017) ने ग्रामीण समाज में बालिका शिक्षा, स्वास्थ्य और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया है। ग्रामीण क्षेत्रों जैसे जींद, भिवानी और सिरसा में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाएँ सूक्ष्म उद्यमों, हस्तशिल्प और डेयरी व्यवसाय में योगदान दे रही हैं।

सांस्कृतिक रूप से भी महिलाओं की स्थिति में सकारात्मक बदलाव आए हैं। पहले जहाँ लोकनृत्य, तीज और सावन जैसे पर्व केवल धार्मिक भावनाओं से जुड़े माने जाते थे, अब ये सांस्कृतिक मंचों और राज्य–स्तरीय आयोजनों का रूप ले चुके हैं, जिनमें महिला सहभागिता और नेतृत्व बढ़ा है। हरियाणा की महिला खिलाड़ियों जैसे साक्षी मलिक (कुश्ती), बबीता फोगाट (कुश्ती) और मनीषा मलिक (हैंडबॉल) ने न केवल खेल में बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी महिलाओं की छवि को नई दिशा दी है।

हालाँकि, ग्रामीण अंचलों में अभी भी पारंपरिक मानदंडों का प्रभाव विद्यमान है। जातीय–पंचायत व्यवस्था, पितृसत्तात्मक सोच और लिंग–भेदभाव जैसी चुनौतियाँ पूरी तरह समाप्त नहीं हुई हैं। फिर भी, मीडिया, शिक्षा और कानूनी जागरूकता ने महिलाओं को अपनी सामाजिक पहचान स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर दिया है। आज की हरियाणवी महिला परंपरा की संवाहक भी है और आधुनिकता की प्रतीक भी।

9. मीडिया और डिजिटल मंचों पर हरियाणा की सांस्कृतिक पहचान

हरियाणा की सांस्कृतिक पहचान अब केवल लोकमंचों या ग्रामीण उत्सवों तक सीमित नहीं

रही, बल्कि डिजिटल माध्यमों और सोशल मीडिया के जरिए वैश्विक स्तर पर प्रसारित हो रही है। 2015 के बाद इंटरनेट और स्मार्टफोन के प्रसार ने हरियाणवी संस्कृति को एक नई दिशा दी है। दूरसंचार विभाग के अनुसार, वर्ष 2023 तक राज्य की लगभग 81 प्रतिशत जनसंख्या इंटरनेट का उपयोग कर रही थी। इस तकनीकी पहुँच ने लोकसंस्कृति के संरक्षण, प्रस्तुति और प्रचार में बड़ी भूमिका निभाई है।

हरियाणवी संगीत और लोकगीत अब यूट्यूब, इंस्टाग्राम और स्पॉटिफाई जैसे प्लेटफार्मों पर करोड़ों दर्शकों तक पहुँच चुके हैं।[ix] हरियाणवी गीत जैसे ''देसी देसी ना बोल्या कर'' (2016) और ''52 गज का दामन'' (2020) ने न केवल क्षेत्रीय लोकप्रियता प्राप्त की बल्कि उत्तर भारत के अन्य राज्यों में भी हरियाणवी बोली और लोकसंगीत को प्रसिद्ध किया। इन गीतों की लोकप्रियता ने हरियाणवी कलाकारों को नए अवसर दिए जैसे सपना चौधरी, रेनूका पंवार, अजय हूडा और गुलजार छोरा जैसी हस्तियों ने लोकनृत्य और रागिनी को आधुनिक रूप में प्रस्तुत किया है।

मीडिया ने हरियाणा के सामाजिक विमर्श को भी प्रभावित किया है। राज्य के प्रमुख समाचार चैनल हरियाणा न्यूज और पंछी टीवी अब ग्रामीण मुद्दों, लोककला, खेल और महिला सशक्तिकरण को प्राथमिकता देते हैं। इससे ग्रामीण समाज में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक जागरूकता का प्रसार हुआ है। विश्वविद्यालयों और विद्यालयों में मीडिया स्टडीज और डिजिटल आर्ट्स के कोर्स शुरू हुए हैं, जिससे नई पीढ़ी सांस्कृतिक संचार का हिस्सा बन रही है। डिजिटल मंचों ने लोकधरोहर को भी संरक्षित किया है। ''हरियाणा कल्चर पोर्टल'' और ''डिजिटल हरियाणा आर्काइव'' जैसी पहलें राज्य सरकार ने 2022 में शुरू कीं, जिनका उद्देश्य लोककथाओं, गीतों, पारंपरिक कला रूपों और सांस्कृतिक स्थलों को डिजिटल प्रारूप में संरक्षित करना है। अब लोककला केवल मौखिक परंपरा नहीं रही, बल्कि वीडियो, डॉक्युमेंटरी और पॉडकास्ट के रूप में सुरक्षित की जा रही है।

10. विश्लेषणात्मक विवेचना : भौगोलिक सत्तता में परंपरा और आधुनिकता का संवाद

हरियाणा का सामाजिक–सांस्कृतिक भूगोल परंपरा और आधुनिकता के निरंतर संवाद का प्रत्यक्ष उदाहरण है। राज्य का भौगोलिक ढाँचा जिसमें मैदान, अरावली पर्वतमाला और शिवालिक क्षेत्र सम्मिलित हैं– सामाजिक परिवर्तन की गति और स्वरूप दोनों को प्रभावित करता है। परंपरा यहाँ मिटती नहीं, बल्कि रूप बदलकर आधुनिक जीवन के साथ समरस हो जाती है। लोकसंस्कृति के अनेक रूप जैसे साँग, घूमर, रागिनी, तीज, बैसाखी और मेले अब राज्य के सांस्कृतिक कैलेंडर का हिस्सा हैं।

इन पारंपरिक रूपों का उपयोग राज्य सरकार द्वारा पर्यटन, सांस्कृतिक प्रोत्साहन और सामाजिक एकता के प्रतीक के रूप में किया जा रहा है। आधुनिकता के प्रभाव के साथ–साथ ग्रामीण जीवन की सामाजिक व्यवस्था, जातीय परंपराएँ, कृषि–संस्कृति और सामाजिक संगठन अब भी अपनी पहचान बनाए हुए हैं। यह स्थिति परंपरा और परिवर्तन के संतुलन को दर्शाती है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

तालिका 9 : हरियाणा में परंपरा–आधुनिकता का भूगोलिक वितरण

क्षेत्र	**प्रमुख परंपरागत तत्व**	**आधुनिक प्रभाव**	**प्रमुख सामाजिक परिवर्तन**
उत्तरी (अंबाला–पंचकूला)	लोकगीत, हस्तशिल्प, लकड़ी कला	शिक्षा एवं उद्योग विस्तार	क्षेत्रीय रोजगार और हस्तशिल्प विपणन
मध्य (रोहतक–सोनीपत–जींद)	कृषि एवं रागिनी परंपरा	औद्योगिक नगरों का विकास	ग्रामदृशहर अंतर्संबंध मजबूत
दक्षिण–पश्चिम (रेवाड़ी–भिवानी–महेन्द्रगढ़)	पशुपालन, लोकनृत्य, मंदिर उत्सव	सौर ऊर्जा, इको–पर्यटन	पर्यावरण एवं सांस्कृतिक स्थायित्व की ओर झुकाव

स्रोत : शोधार्थी द्वारा हरियाणा आर्थिक सर्वेक्षण 2023–24 (सांस्कृतिक व भूगोल प्रकरण), एवं हरियाणा पर्यटन विभाग 2023 से संकलित

राज्य के आर्थिक सर्वेक्षण के आंकड़ों के अनुसार ग्रामीण–शहरी संपर्क, शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवहन के विस्तार ने परंपरागत समाज को आधुनिक संरचना से जोड़ा है। यह समन्वय ‘‘भौगोलिक सततता’’ की दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि परिवर्तन रेखीय नहीं बल्कि क्षेत्रीय विशेषताओं के अनुसार विविध है। जैसा कि हम देख सकतें हैं उपरोक्त विवरण से हरियाणा का सामाजिक–सांस्कृतिक परिदृश्य यह दर्शाता है कि यहाँ आधुनिकता ने परंपराओं को विस्थापित नहीं किया बल्कि उन्हें पुनर्संयोजित कर एक नया सामाजिक भूगोल निर्मित किया है– जहाँ लोकसंस्कृति और विकास–चेतना समानांतर रूप से चल रही हैं।

निष्कर्ष

हरियाणा का सामाजिक–सांस्कृतिक भूगोल यह दिखाता है कि राज्य में परंपरा और आधुनिकता का रिश्ता विरोध का नहीं बल्कि संतुलन और सह–अस्तित्व का है। इसकी भौगोलिक विविधता, कृषि–आधारित अर्थव्यवस्था और लोक–संस्कृति मिलकर एक विशिष्ट पहचान बनाती हैं। पिछले पाँच दशकों में औद्योगीकरण, शहरीकरण, शिक्षा, मीडिया और संचार सुविधाओं ने समाज में तेज परिवर्तन लाए। इनसे पारंपरिक ढाँचे कमजोर नहीं हुए बल्कि नए रूप में जीवित हुए; लोककला, लोकगीत और त्यौहार अब राज्य व राष्ट्रीय पहचान का हिस्सा बन गए। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि और समुदाय जीवन आज भी परंपरा की जड़ों से जुड़े हैं, जबकि शहरी क्षेत्र औद्योगिक और सेवा–आधारित अर्थव्यवस्था से आधुनिक सोच को अपनाए हुए हैं। हरियाणा में परंपरा नैतिकता और मूल्यों की प्रेरणा बनी हुई है, वहीं आधुनिकता ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समानता और आत्मनिर्भरता को बल दिया है। महिलाओं व युवाओं

की बढ़ती भागीदारी, शिक्षा और मीडिया–संस्कृति के प्रसार से हरियाणा की पहचान सीमित न रहकर वैश्विक स्तर तक पहुँची है। यह एक ऐसे समाज का उदाहरण है जहाँ गाँव और शहर, परंपरा और नवाचार, लोकजीवन और आधुनिक तकनीक एक ही सांस्कृतिक धारा में समाहित हैं। तो हम कह सकते हैं कि हरियाणा का सामाजिक–सांस्कृतिक भूगोल परंपरा और आधुनिकता के सह–अस्तित्व का सशक्त प्रतीक बन गया है, जो केवल आर्थिक नहीं बल्कि मानसिक व सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की दिशा में एक निरंतर प्रक्रिया है।

संदर्भ सूची

[i] गोयल, एस. (2011)., द डिस्ट्रिब्यूशन एंड डेंसिटी ऑफ पॉप्युलेशन इन हरियाणा स्टेट, इंडिया : अ जियोग्राफिकल एनालिसिस. लॉयोला जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 25(1)।

[ii] अंजलि, एवं सुचित्रा. (2024)., एकोज ऑफ ट्रेडिशन : एक्सप्लोरिंग द कल्चरल फैब्रिक ऑफ हरियाणा : फोक सॉन्गस. एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन : थ्योरी एंड प्रैक्टिस, 30(4), 11221–11226।

[iii] कुमार, संदीप. (2018)., ''ग्राम–स्तर पर सांस्कृतिक स्वायत्ततारू हरियाणा का अनुभव'' भूमि भूगोल पत्रिका, 5(2), 30–42।

[iv] राठी, प्रदीप., (2020)., हरियाणा का भूगोल. रोहतक : राजस्थान पब्लिशिंग हाउस., पृ० 52–65।

[v] .देशवाल, सन्त्राम. (2017)., हरियाणा–संस्कृति एवं कला. पंचकुला : हरियाणा ग्रंथ अकादमी. , पृ० 25–29।

[vi] डोगरा, टी., एवं त्रिपाठी, ए. के. (2024)., ऑप्टिमाइजिंग टूरिज्म डेवलपमेंट इन हरियाणा : अ कॉम्प्रिहेन्सिव एनालिसिस ऑफ कनेक्टिविटी, प्रमोशन, कॉस्ट डायनैमिक्स एंड आईसीटी यूटिलाइजेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ टोटल टूरिस्ट प्रॉडक्ट्स. जर्नल ऑफ टूरिज्म इनसाइट्स, 14(1)।

[vii] यादव, अंकिता, एवं महाबीर एस. जगलान. (2021)., डायनैमिक्स एंड स्पैशियलिटी ऑफ सोशियो–इकोनॉमिक डेवलपमेंट ड्यूरिंग पोस्ट लिबरलाइजेशन पीरियड : अ स्टडी ऑफ अहिरवाल रीजन (हरियाणा), इंडिया. रिफ्लेक्शन्स ऑन 21st सेंचुरी ह्यूमन हैबिटैट्स इन इंडिया : फेलिसिटेशन वॉल्यूम इन ऑनर ऑफ प्रोफेसर एम. एच. कुरैशी, सिंगापुर : स्प्रिंगर सिंगापुर, पृ० 271–291।

[viii] शर्मा, पी. (2022)., हरियाणवी लोकगीत एवं सांस्कृतिक पहचान., हिंदी अध्ययन पत्रिका, खंड 4(2), पृ० 210–215।

[ix] कुमार, देवेंद्र. (2022)., डिजिटलीजेशन ऑफ हरियाणवी फोक सॉन्ग्स : अ क्यूरियस केस ऑफ प्रिजर्विंग इंटैन्जिबल कल्चरल हेरिटेज थ्रू सोशल मीडिया., डिजिटलीजेशन ऑफ कल्चर : टेक्नोलॉजी, रूटलेज, पृ० 253–259।

10 जनगणना भारत, जनसंख्या आयु संरचना रिपोर्ट, 2021।

11 राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ), रोजगार एवं युवा रिपोर्ट, 2022।